डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की एक स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी का साहित्योत्सव 2018 संपन्न
अंतिम दिन रहा बच्चों के नाम
भारतीय साहित्य में प्रकाशकों की भूमिका पर परिसंवाद
कुटीर से कॉरपोरेट उद्योग तक पहुँचा प्रकाशन जगत – माधव कौशिक
आज़ादी के बाद स्त्री लेखन के कई रूपक बदले हैं – मृदुला गर्ग
राष्ट्रीय संगोष्ठी 'भारत की स्वाधीनता के 70 वर्ष : साहित्य में चित्रण' का भी समापन

नई दिल्ली। 17 फरवरी 2018 – साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित साहित्योत्सव 2018 का अंतिम दिन बच्चों के नाम रहा। **आओ कहानी बुने** शीर्षक से इस कार्यक्रम में उनके लिए कहानी और कविता लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई और प्रख्यात लेखक और कार्टूनिस्ट आबिद सुरती एवं रजनीकांत शुक्ल से बच्चों का संवाद भी कराया गया। इस अवसर पर राष्ट्रपति से वीरता पुरस्कार प्राप्त नाज़िया ख़ान भी उपस्थित थीं और उन्होंने भी बच्चों के साथ अपनी कहानी को साझा किया। आयोजित प्रतियोगिताओं में दिल्ली एवं एन.सी.आर. के लगभग 30 विद्यालयों के 300 बच्चों ने भागीदारी की, जिनमें प्रमुख स्कूल निम्नांकित थे : केंद्रीय विद्यालय, सर्वोदय कन्या विद्यालय, सरदार पटेल स्कूल, सर्वोदय बाल विद्यालय, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, मॉर्डन स्कूल मिलेयनिमय श्रीराम स्कूल और दिल्ली पब्लिक स्कूल। बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए।

'भारतीय साहित्य में प्रकाशकों की भूमिका' विषय पर आयोजित परिसंवाद का उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात असमिया लेखक डॉ. ध्रुव ज्योति बोरा ने दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने की। डॉ. ध्रुव ज्योति बोरा ने अपने संबोधन में कहा कि भारत में क्षेत्रीय भाषाओं में लिखे गए साहित्य की विपुल धरोहर है। लेकिन अनुवाद न होने के कारण वह साहित्य पाठकों तक नहीं पहुँच पा रहा है। प्रकाशकों और लेखकों की सबसे बड़ी चिंता अनुवाद को लेकर होनी चाहिए, जिससे इस समस्या का कोई ठोस समाधान हो सके। इस संबंध में उन्होंने साहित्य अकादेमी का उल्लेख करते हुए कहा कि इसी तरह की संस्थाओं और प्रकाशन संस्थानों को आगे आकर इस संबंध में कुछ व्यवाहारिक योजनाएँ बनानी होंगी। उन्होंने असमिया साहित्य और वहाँ के प्रकाशकों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि क्षेत्रीय भाषा के प्रकाशकों को संसाधनों की कमी से जूझना पड़ रहा है।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने कहा कि प्रकाशक और लेखक का रिश्ता बड़ा संवेदनशील है। प्रकाशन उद्योग, जो कभी कुटीर उद्योग हुआ करता था, आज कॉरपोरेट युग में पहुँच चुका है। यहाँ पर भी टिकाऊ और बिकाऊ साहित्य की लड़ाई है। उन्होंने प्रकाशकों से अनुरोध किया कि लेखक के अधिकारों की सुरक्षा का ध्यान रखें, वहीं लेखकों से भी अपील की कि वे उनकी व्यावहरिक समस्याओं के प्रति सहानुभूतिपूर्वक सोचें। अपने स्वागत भाषण में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि पुस्तक प्रकाशन की दृष्टि से भारत दुनिया में छठे स्थान पर है और अंग्रेजी पुस्तक प्रकाशन में अमेरिका और इंग्लैंड के बाद भारत तृतीय स्थान पर है। हमें इतने व्यापक क्षेत्र के बारे में गंभीरता से सोचने की ज़रूरत है।

अगले सत्र की अध्यक्षता श्री बिकास डी. नियोगी ने की, जिसमें श्री अरुण माहेश्वरी (हिंदी), श्री अरुण जाखड़े (मराठी) तथा सुश्री वैशाली माथुर (अंग्रेजी) ने अपनी भाषाओं में प्रकाशन की स्थिति पर प्रकाश डाला।

अंतिम सत्र की अध्यक्षता श्री लीलाधर मंडलोई ने की, जिसमें श्री रमेश के. मित्तल (प्रकाशन संघ के अध्यक्ष), श्री रवि डीसी (मलयाळम्), श्री विजय (तेलुगु) तथा श्री हक़्क़ानी अल–कासमी (उर्दू) ने अपनी–अपनी भाषाओं में प्रकाशन की स्थिति पर डाला। दोनों सत्रों के अंत में लेखकों और पाठकों ने प्रकाशकों से सवाल भी पूछे, जो मुख्यतः प्रकाशकों द्वारा पारदर्शिता न बरतने के संबंध में थे। प्रकाशकों द्वारा रॉयल्टी का उचित भुगतान, छापी गई पुस्तकों की संख्या आदि की जानकारी न देने के बारे में भी लेखकों ने सवाल उठाए। इस पर प्रकाशकों ने जवाब देते हुए कहा कि अभी भी हमारे प्रकाशक बहुत छोटे स्तर पर यह कार्य रहे हैं। उन्हें इन सब चीज़ों में व्यासायिक नज़रिया अपनाकर इन सब चीज़ों से मुक्ति मिल सकती है। सवाल पूछने वाले लेखकों में सर्वश्री भालचंद्र नेमाड़े, श्री प्रयाग शुक्ल, श्री मंगलेश डबराल एवं श्री राजीव रंजन गिरि प्रमुख थे।

भारत की स्वाधीनता के 70 वर्ष : साहित्य में चित्रण विषय पर आयोजित संगोष्ठी के अंतिम दिन आज 'स्वाधीनता के सात दशक : स्त्रीवादी परिप्रेक्ष्य' विषय पर श्रीमती मृदुला गर्ग की अध्यक्षता में सुश्री माया पंडित, सुश्री सविता सिंह, सुश्री सी. मृणालिनी, सुश्री जयवंती डिमरी ने अपने वक्तव्य दिए। अध्यक्षीय वक्तव्य में सुश्री मृदुला गर्ग ने कहा रवींद्रनाथ ठाकुर और लक्ष्मण राव ने पुरुष होते हुए भी स्त्रीवादी लेखन किया। मूल्यों की लड़ाई ही असली नारीवादी लड़ाई है। आज़ादी के बाद स्त्री लेखन के कई रूपक बदले हैं।

अगला सत्र 'सात दशकों के दौरान बाल साहित्य का विकास' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता सुश्री दीपा अग्रवाल ने की। इस सत्र में श्री दिनेश गोस्वामी तथा सुश्री इरा. नटरासन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र 'आज लेखक कितने स्वतंत्र हैं' विषय पर था, जिसकी अध्यक्षता प्रो. एल.एल. भैरप्पा ने की और डॉ. सी. राधाकृष्णन, श्री दामोदर मावज़ो तथा सुश्री सुकृता पॉल कुमार अपने विचार व्यक्त किए। सत्राध्यक्ष प्रो. एस.एल. भैरप्पा ने अपने महत्त्वपूर्ण वक्तव्य में आज़ादी के बाद सत्तासीन नेताओं से जुड़े कई किस्से बताए। उन्होंने कहा कि इतिहास पढ़ाने का मतलब है अच्छाई को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना। हमारे देश में राजनीतिक सच्चाई का सामना करने से लोग घबराते हैं।

ह./
(के. श्रीनिवासराव)